International Educational Applied Research Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

E-ISSN No: 2456-6713

''उदयप्रकाश के कथा साहित्य में संवादात्मक सामाजिक समरसता''

*घनश्याम चौधरी, **डॉ. आशा अग्रवाल

*शोधार्थी, श्री अटल बिहारी वाजपेयी शा. कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, इन्दौर (म.प्र.)

**निर्देशक,प्राध्यापक (हिन्दी विभाग)श्री अटल बिहारी वाजपेयी शा. कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, इन्दौर (म.प्र.)

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.12510187

1. परिचय :

समकालीन हिन्दी साहित्य **सामाजिक समरसता** और वर्तमान मुद्दे से संदर्भित है। **सामाजिक समरसता** में अतीत के कड़वे–खट्टे–मीठे अनुभव तो हैं ही पर साथ ही वर्तमान के अनेकानेक सुखद–दुखद संयोग भी हैं।

उदय प्रकाश एक हिन्दी साहित्य के एक प्रतिष्ठित कथाकार हैं। आपने हिन्दी कथा साहित्य को एक नये स्वरूप में प्रस्तुत किया है। उनकी जड़ें अपने समय, समाज और संस्कृति में गहरे तक समायी हुई हैं। उनकी कोई भी रचना समकालीनता से अधूरी नहीं है। उदय प्रकाश का गहरा लगाव अपनी सांस्कृतिक धरोहरों के प्रति है। उन्होंने अपने कथा साहित्य को दक्षिण–पूर्वी मध्यप्रदेश, पूर्वी मध्यप्रदेश तथा दिल्ली के सीमान्त क्षेत्र के आस–पास, गाँव–कस्बे, नगर–महानगर आदि के वास्तविक जीवन, संस्कृति, भौगोलिक स्थिति और वातावरण से सम्बन्धित रखा है। इसी वजह से **सामाजिक समरसता** के दर्शन उनके कथा साहित्य में होते हैं। उनके कथा साहित्य में काव्यात्मक संवेदना के स्वर मुखरित होते हैं। उनके कथा साहित्य के तत्व ईश्वर, इतिहास, पुरातत्व और समय है।

प्रस्तुत शोध पत्र में उदय प्रकाश के चयनित कहानी संग्रहों की चयनित कहानियों में संवादों के माध्यम से उभरे **सामाजिक समरसता** के स्वरों को प्रस्तुत किया गया है। इनका उल्लेख निम्नलिखित हैं –

और अंत में प्रार्थना (1994) :–

यह उदय प्रकाश जी का प्रसिद्ध कहानी संग्रह है। इस संग्रह में चार आत्मकथाएँ – तेरह छोटे–छोटे किस्से तथा दो कहानियाँ संकलित हैं। और अंत में प्रार्थना कहानी का उर्दू में अनुवाद पाकिस्तान में 'आज' में प्रकाशित हो चुका है। यह दर्शाता है कि

International Educational Applied Research Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

E-ISSN No: 2456-6713

इस कहानी में अवश्य **सामाजिक समरसता** में भी प्रकाशित हुआ। इस कहानी में उदय प्रकाश पाठक पर अपना दबाव कुछ इस तरह बनाते हैं जैसे मैंने भी पहले अर्ज किया था कि यह कहानी नहीं है, सच्चाई है।

उनकी कथाओं के संवादों में शहरी और ग्रामीण समाज की समरसता को उनहीं की भाषा के शब्दों के माध्यम से प्रस्तुत किया है। शहर में रहने वाले लोगों की जीवन शैली, बोलचाल, रहन–सहन, विचारों को उनकी मानसिकता को उदय प्रकाश ने ज्यों का त्यों संवाद में प्रस्तुत किया है। उन्होंने 'मोहनदास', 'पीली छतरी वाली लड़की', 'मैंगोसिल', 'तिरिछ' तथा 'दत्तात्रेय के दुःख' आदि लम्बी कहानियों में महानगरीय जीवन से सम्बन्धित शब्दों के माध्यम से **सामाजिक समरसता** को प्रकट किया है। इन शब्दों का कहानियों के संवादों में उपयुक्तता प्रयोग हुआ है –''टैक्सी, पिक्चर, ऑर्डर, यूनिवर्सिटी, हॉल, रिहर्सल, प्राइवेट, कमर्शियल, कान्वेंट, मॉडल, डेली वेजेस, मनी ऑडर, टार्च, ट्रैक्टर, पैशेंट्स आदि ऐसे कई शब्द हैं जो शहरी जीवन का बोध कराते हैं। [1] इनकी कहानियों में इलाहबाद, बनारस, दिल्ली, कलकत्ता आदि भारतीय महानगरों के साथ इंग्लैण्ड जैसे विदेशों का भी उल्लेख आया है। एक उदाहरण प्रस्तुत है – ''गाय की आँखों से लगातार आँसू बहते रहे। इंग्लैण्ड के औद्योगिक पूंजीवादी समाज में किसी ने उन आँसूओं को नहीं देखा। गाए ने खाना ही नहीं, पानी तक पीना छोड़ दिया। अगर राजनीतिक शब्दावली का इस्तेमाल करें तो शायद उसने भारत के इतिहास में पहला सत्याग्रह इंग्लैण्ड के बर्कशायर नामक शहर में, ईस्ट इंडिया कंपनी के पूर्व गर्वनर जनरल वॉरेन हैंस्टिंग्स के 'प्योरली हॉल' नामक बंगले में प्रारंभ किया। [2] इस उदाहरण से स्पष्ट होता है कि उदय प्रकाश की कथाओं में भारत के महानगरों के समाज एवं इंग्लैण्ड के बर्कशायर के समाज संदर्भित सामाजिक, अंतरराष्ट्रीय **सामाजिक समरसता** का सफल–प्रभावी प्रस्तुतीकरण है।

इनके अतिरिक्त 'और अंत में प्रार्थना' कहानी में उदय प्रकाश ने आदिवासी समाज और दिल्ली जैसे महानगरीय समाज की समरसता को एक साथ पिरोया है – ''आदिवासियों के अंडे और कलेजे से चॉकलेट बनता है, जिसे दिल्ली की औरतें खाती हैं। [3] इअस प्रकार के संवादों के माध्यम से कलाकार ने ग्रामीण आदिवासी समाज और शहरी समाज का चित्रण करके **ग्रामीण व महानगरीय समाज** में तादात्म्य स्थापित किया है।

'दिल्ली की दीवार' कहानी में लेखक के रिज़वान की दाढ़ी को खिचड़ी दाढ़ी की उपमा देकर एक नया उपनाम निर्माण किया है। ''रिजवान के चेहरे पर खिचड़ी दाढ़ी थी और उसका चेहरा देखकर फिल्म काबुलीवाला के बलराज साहनी की याद आती थी। [4] इस संवाद के माध्यम से कथाकार ने **फिल्मी समाज** से समरसता स्थापित की है।

कथाकार उदय प्रकाश ने अपनी कथाओं में विशुद्ध हिन्दी भाषा के साथ–साथ प्रादेशिक भाषा एवं वहाँ की स्थानीय बोली को स्थान दिया है, जिससे क्षेत्रीय समाज एवं अहिंदी भाषा भाषी समाज तथा **हिन्दी भाषिक समाज** में समरसता का प्रभाव अनुभव किया जा सकता है। उदाहरण के तौर पर उनकी चर्चित कहानी 'मोहन दास' में भोजपुरी भाषा का प्रयोग हुआ है – ''एक केर टोपी दूसर के मुड माँ टांगै वपली हेराफेरी मां जश्न आनंद है भइया, ओखकर सामन आन केर मेहरास का जांघे के नीचे दाबै वाचा मज़ा बहु छींट चीज़ आय.....। हा.....हा.....हा। [5]

International Educational Applied Research Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

E-ISSN No: 2456-6713

इसी **सामाजिक समरसता** के परिप्रेक्ष्य में अगला उद्धरण उदय प्रकाश की भावप्रधान रचना 'पीली छतरी वाली लड़की' में विश्वविद्यालय का चित्रण है। विश्वविद्यालय में पढ़ने के लिये दूर–दराज से विभिन्न प्रदेशों के छात्र आते हैं, जिसमें असम, मणिपुर, महाराष्ट्र, बिहार आदि प्रमुख हैं। कहानी में असम से आया एक छात्र सापाम तोंबा की भाषा मणिपुरी है। उसके संवाद से समाज की भीषण विभीषिका पाठकों के समक्ष आती है। ''मैं अगर उदरी जाएंगा तो मिजे पी.एल.ए. का का मेंबर बताकर वो लोग गोली मार देंगा, हम उदर से ज्यादा इयर सेफ है। [6] सापाम तोंबा को इस कहीं में उदय प्रकाश जी ने इस प्रकार चित्रित किया है कि उसे विश्वविद्यालय में पढ़ने के लिये उसके भाई ने ही भेजा था, जो कि मणिपुर के किसी प्रायमरी स्कूल का टीचर था, लेकिन वहाँ की राजनीति और लोकल गुंडों के षड़यंत्रों का वह शिकार बनता है, परिणाम स्वरूप उसके भाई को अपनी जान गंवानी पड़ती है। इन भावनाओं को सापाम व्यक्त करते हुए कहता है – ''हम रोज सोचता है, आज हम स्युइसाइड कर लेगा। लेकिन लेकिन हम जरूर कर लेगा। हम क्यों जिएगा? मिजको पढ़ाई के वास्ते पैसा मेरा भाई भेजता था। अब कौन भेजेगा? किसको बताओ.... टेल मी।[7] इस कहानी के संवादों के माध्यम से उदय प्रकाश ने मणिपुर **समाज में समरसता** का अभाव बताया है, वहीं दूसरे शहरीय समाज में सामाजिक समसरता दिखाई देता है। इसी तरह 'पीली छतरी वाली लड़की' कहानी में लोकल गुंडे कभी–कभी मराठी शब्दों का प्रयोग करते हुए बताये गये। जैसे 'काम दीदी'' यहाँ भाषा के माध्यम से **सामाजिक समरसता** का प्रयोग है। इसी कहानी में एक पी.एम. है जो अत्यधिक कामुक भावना से ग्रसित है। उसके संवाद सिंधी भाषा में इस प्रकार हैं – बेचो ..... हैलो! गेट भी टू ट पी.एम. ! आसम निखलाणी हियर! ..... बेचो सब कुछ बेचो। हम सब खरीदेगा साई ..... इंडिया की गवर्नमेंट को प्रायवेटाइज करों पंड़ित डिफेंस को प्रायवेटाईज करो। हम पुलिस फोज़ पैरामिलिट्री सबको खरीदेगा.... जो खिलाफ में बोले, उसको शूट करो मानचो। वो नक्सलवाद है, आई.एस.आई. का एजेंट। मेरे को बी.पी. है... पंडित, बी क्विक। जल्दी.....जल्दी करो। [8] यहाँ सामाजिक समसरता का नकारात्मक पक्ष भाषा की **सामाजिक समरसता** संदर्भित दिखाया गया है।

उदय प्रकाश की कथाओं में भोजपुरी, सिंधी, मराठी, बंगाली और मणिपुरी भाषाओं के साथ अत्यधिक अंग्रेजी भाषा के संवाद **सामाजिक समरसता** स्थापित करते नजर आते हैं। 'मोहनदास' कहानी का पात्र मुक्तिबोध का यह संवाद – ''दि होल सिस्टम हैज़ टोटली कौलेस्ड ! जस्ट लाइन दविक टॉवर्स इन न्यूयार्क..... नाइने एलवेन! [9]

अतः निष्कर्षात्मक तौर पर कह सकते हैं कि उदय प्रकाश ने अहिंदी भाषी प्रदेशों की भाषा को अपने साहित्य की भाषा बनाकर न केवल साहित्यिक समरसता की सृष्टि की है वरन् अपनी विद्वता एवं बहुज्ञता का परिचय देते हुए भाषा प्रयोग द्वारा **सामाजिक समरसता** को बनाये रखा है।

सामाजिक समरसता के सृजन हेतु उनका यह बहुभाषिक प्रयोग अपने आप में अलग सा प्रतीत होता है। उन्होंने अपने कथा साहित्य की रोचकता बढ़ाने के लिये बोलचाल की भाषा का प्रयोग किया है। **सामाजिक समरसता** में वृद्धि हेतु जनजीवन से भाषा के माध्यम से संवादों की अदायगी महत्वपूर्ण व उपयोगी है।

International Educational Applied Research Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

E-ISSN No: 2456-6713

निष्कर्ष :

उदय प्रकाश के कथा साहित्य में समकालीनता और प्रासंगिकता इस संवादों के संदर्भ में इसलिये उल्लेखनीय है कि उनमें **सामाजिक समरसता** को निरंतर बनाये रखा है। उन्होंने उन संवादों में मौलिक एवं नैसर्गिक रूप से सामाजिक विसंगतियों और अन्तर्विरोधों को स्थान दिया है, जो उनमें कहानियों के विषयों के अनुरूप **सामाजिक समरसता** को कभी बासी नहीं पड़ने दे सकते हैं। उनके संवाद भयावह पूँजीवादी दुनिया और कर्कश हो गये बाजार में होते हुए भी उस मनुष्य को खोजकर प्रस्तुत करते हैं जो जिन्दा बने रहने के संघर्ष में भी **सामाजिक समरसता** को भूलता नहीं है। छतरियाँ कहानी में किशोर सुलभ मन के संवाद संवेदना द्वारा सामाजिक समरसता की सृष्टि उम्र के कारक द्वारा करते हैं। 'साईकल' कहानी के संवाद निजत्व को दर्शाते हैं। उनकी कथा साहित्य के संवादों को किसी एक दायरे में बांधना कठिन है। उन्होंने किसी ढर्रे से बंधकर संवाद नहीं लिखे हैं। उनमें विविधता इतनी है कि कहीं दोहराव नहीं दिखाई देता। वे साधारण से विषय को लेकर कहानी का विषय उठाते हैं और अंत तक आते–आते उसके संवाद सामाजिक समरसता के विशिष्ट उद्देश्य को उद्धारित करते हैं। पात्रों के संवाद चाहे ग्रामीण भाषा के हों या महानगर के, उदय प्रकाश के नायक वे ही पात्र होते हैं, जो चारों ओर से ठगे गये हैं, जिनका सबकुछ छीना जा चुका है। उनकी **सामाजिक समरसता**, अमीर बनाम आम आदमी, पूंजीवाद बनाम आम आदमी, विकास बनाम आम आदमी और जो सुख–सुविधा हासिल, वह सब उसी आम आदमी के शोषण से जुड़ी संवादात्मक अभिव्यक्ति उनके संवादों में स्मृतियाँ हैं, स्वप्न हैं, आशाएँ हैं। अगर संवादों में प्रेम की अभिव्यक्ति भी हैं तो भावुकता नहीं है। उनके संवादों में मानो **सामाजिक समरसता** के संस्कार घुले–मिले हैं, जो कहानी को उदात्तता प्रदान करते हैं। संवादों का निर्मल प्रवाह उनकी भाषा को बहा ले जाता है – जैसे किसी सोने से जल प्रवाहित होता है। संवादों की सुधड़ता और सृजन दर्शनीय है। यही कारण है कि उदय प्रकाश के कथा साहित्य के संवादों में **सामाजिक समरसता** की आस्थापूर्ण, खुलेपनवाली तथा मासूमियत भरी सृष्टि अनुभव होती है।

संदर्भ ग्रंथ :

1. https://www.allsubjectjour. on dated 30.12.23 at 11.45 am.
2. उदय प्रकाश, पॉल गोमरा का स्कूटर (वॉरेन हैस्टिंग्स का साँड) पृ.सं.–154
3. उदय प्रकाश, और अंत में प्रार्थना, पृ.सं.–133
4. उदय प्रकाश, दत्तात्रेय के दुःख (दिल्ली की दीवार), पृ.सं.–68
5. उदय प्रकाश, मोहनदास, पृ.सं.–19
6. उदय प्रकाश, पीली छतरी वाली लड़की, पृ.सं.–19
7. उदय प्रकाश, पीली छतरी वाली लड़की, पृ.सं.–19

International Educational Applied Research Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

E-ISSN No: 2456-6713

8. उदय प्रकाश, मोहनदास, पृ.सं.–76

9. उदय प्रकाश, मोहनदास, पृ.सं.–77